विकलांग आश्रितों का आने वाला कल बनाएं उज्ज्वल

विकलांग आश्रितों के बेहतर भविष्य के लिए अप्रत्याशित आपातकालीन जरूरतों के लिए पहले से ही योजना बना कर चलना अच्छा रहता है। जब माता-पिता को उनकी मेडिकल जरूरतों के साथ-साथ उनकी वित्तीय सुरक्षा के लिए भी योजना बनानी चाहिए।

जितेंद्र सोलंकी

आज विश्व विकलांगता दिवस है। इसकी शुरुआत यूनाइटेड नेशंस ने साल 1992 में की थी जिसे अब पूरे विश्व में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विकलांगता के मसले को समझने के साथ-साथ विकलांग व्यक्तियों की प्रतिष्ठा, अधिकारों और उनके हित के बारे में सोचना है।

यद्यपि इस तरह के आयोजनों से विकलांग से पीड़ित व्यक्तियों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में जागरूकता बढ़ती है लेकिन वित्तीय भविष्य के बारे में नहीं सोचा जाता। इसकी प्रमुख वजह उनकी वित्तीय जरूरतों के संदर्भ में जागरूकता और एडवाइजर या प्लानर की दिलचस्पी का कम होना है। विकलांग व्यक्तियों के विकास जैसे थीम को तभी मूर्त रूप दिया जा सकता है जब विकलांगता से पीड़ित व्यक्ति, उनकी देख-रेख करने वाले या माता-पिता उनके सुरक्षित फाइनेंशियल भविष्य के बारे में योजना बनाएं।

आम तौर पर माता-पिता या देख-रेख करने वाले विकलांग व्यक्ति की वित्तीय जरूरतों और अन्य जरूरतों का ख्याल रखते हैं। हालांकि, अप्रत्याशित घटनाएं कभी भी घट सकती हैं और यह विकलांग व्यक्ति के जीवन को बिना उचित योजना के बुरी तरह प्रभावित कर सकती हैं। भारत सरकार विकलांगों के हित के लिए तमाम तरह की योजनाएं चला रही है। हालांकि, जैसे महंगाई हमारे जीवन को प्रभावित करती है उसी तरह विकलांग व्यक्तियों की वित्तीय जरूरतें भी इससे प्रभावित होती हैं।

यह जरूरी नहीं है कि कोई व्यक्ति जन्म से ही विकलांग हो। कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं भी विकलांगता का कारण बनती हैं और इससे व्यक्ति की जिंदगी प्रभावित होती है। उनके बेहतर भविष्य के लिए सभी अप्रत्याशित आपातकालीन जरूरतों के लिए पहले से ही योजना बना कर चलना अच्छा रहता है। जब माता-पिता को इस बात की जानकारी होती है कि उनका बच्चा विकलांग है या परिवार में कोई विकलांगता से पीड़ित है तो उन्हें उनकी मेडिकल जरूरतों के साथ-साथ उनकी वित्तीय सुरक्षा के लिए भी योजना बनानी चाहिए। हालांकि, अधिकतर परिवार विकलांग व्यक्तियों की वित्तीय जरूरतों और उन्हें मिलने वाले लाभों को लेकर जागरूक नहीं होते हैं। पारिवारिक वित्तीय परिस्थितियां अलग होती हैं और इसकी प्लानिंग इसी आधार पर की जानी चाहिए। किसी विकलांग व्यक्ति के लिए प्लानिंग करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर गौर फरमाना चाहिए।

व्यापक योजना बनाएं

किसी विकलांग व्यक्ति की जरूरतों को व्यापक स्तर पर देखना चाहिए। शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति हो सकता है अपने जीवन यापन के लिए कुछ कमा ले और उसकी जरूरतें मानसिक मंदता से पीड़ित व्यक्ति से अलग होंगी जिसे नियमित देख-रेख की जरूरत होती है। उनकी वित्तीय जरूरतों की पहचान कीजिए जिसमें नियमित दवाइयों के खर्च, विभिन्न उपकरणों की लागत, उनके जीवन-यापन और स्वास्थ्य लाभ संबंधी खर्चे शामिल हों। प्लानिंग करते समय बढ़ती महंगाई पर विचार जरूर करें। इसके अलावा परिवार के अन्य सदस्यों की जरूरतें बिल्कुल भिन्न हो सकती हैं। यह जरूरी है कि परिवार के सभी बच्चों को एक अच्छी शुरूआत मिले। अगर विकलांगता से पीड़ित व्यक्ति अपने जीवन यापन के लिए उपार्जन कर सकता है तो उसे भविष्य के खर्चों के लिए पहले से ही प्लान करते हुए चलना चाहिए।

सरकारी योजनाओं का उठाएं लाभ

विकलांग व्यक्तियों के हित के लिए भारत सरकार ने कई योजनाएं प्रायोजित की हुई हैं। निर्याण हेल्थ इंश्योरेंस स्व-लीनता, मानसिक मंदता, सेरीब्रल पाल्सी और बहु विकलांगता से पीड़ित व्यक्तियों के लिए एक लाख रुपये तक का बीमा उपलब्ध कराती है। यह स्कीम नेशनल ट्रस्ट या इस क्षेत्र में काम करने वाले एनजीओ के माध्यम से उपलब्ध है। इसके अलावा विकलांग व्यक्तियों को देश भर में रेल, बस या हवाई यात्रा के किराए में छूट मिलती है। साथ ही सरकारी नौकरियों में इनके लिए आरक्षण की व्यवस्था भी है। 1,000 रुपये प्रति माह के पेंशन की व्यवस्था विकलांग व्यक्तियों के जीवन यापन के लिए है साथ ही प्रॉपर्टी की खरीद में दो प्रतिशत का रिजर्वेशन होता है। महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के लिए सरकार डिस्काउंट पर लोन उपलब्ध कराती है ताकि ऐसे लोग अपना कारोबार शुरू कर सकें। इसके अलावा कई और योजनाएं हैं जो विकलांगता से पीड़ित व्यक्तियों के परिवार की मदद कर रही हैं। परिवार के विकलांग सदस्य के लिए बीमा लेने पर आयकर अधिनियम की धारा 80डीडी के तहत लाभ मिलता है।

निवेश में बरतें सावधानी

अगर विकलांगता से पीड़ित व्यक्ति वयस्क नहीं है तो माता-पिता या देख-रेख करने वाले को बचत का एक हिस्सा उनके भविष्य की जरूरतों के लिए अलग रखना चाहिए। विभिन्न इंस्ट्रूमेंट्स में सावधानीपूर्वक इस प्रकार निवेश करें कि अपेक्षित लक्ष्य पूरा हो सके। अगर विकलांग व्यक्ति वयस्क है, अपने जीवन यापन के लिए उपार्जन कर रहा है तो उन्हें अपनी बचत का एक हिस्सा आगे के लिए सुरक्षित रखना चाहिए।

सुरक्षा

स्थिति तब ज्यादा बुरी हो जाती है जब देख-रेख करने वाले व्यक्ति या माता-पिता की मृत्यु हो जाती है और वह परिवार के विकलांग सदस्य के लिए किसी तरह का कोई प्रावधान नहीं किए रहते। अगर परिवार के पास अच्छा-खासा धन है तो वह सरकार द्वारा प्रायोजित लाभों का फायदा नहीं उठा सकता। इस प्रकार अगर कानूनी उत्तराधिकारी ने परिवार के विकलांग सदस्य की तरफ ध्यान नहीं दिया तो उसकी जिंदगी कठिनाई भरी हो सकती है। हालांकि, स्पेशल ट्रस्ट बना कर परिवार इस बात के लिए आश्वस्त हो सकता है कि पैसों का इस्तेमाल केवल विकलांग सदस्य के लाभ के लिए होगा। सरकार भी कानूनी अभिभावक नियुक्त करती है अगर विकलांग व्यक्ति का कोई और न हो।

फाइनेंशियल प्लानर की मदद लीजिए

अधिकतर परिवार अपनी प्लानिंग में परिवार के विकलांग सदस्य को शामिल नहीं करते हैं। फाइनेंशियल प्लानर्स से किसी तरह की मदद न मिलने की वजह से विकलांग सदस्य की प्लानिंग में या तो विलंब होता है या फिर सब कुछ अनियोजित चलता रहता है। समझदारी इसी बात में है कि परिवार के विकलांग सदस्य के लिए जितनी जल्दी हो सके, फाइनेंशियल प्लानर की मदद लेनी चाहिए। हालांकि, भारत में अधिकतर प्लानर्स खास तौर से ऐसे परिवारों के लिए काम नहीं करते हैं लेकिन उनकी विशेषज्ञता की बदौलत भविष्य को सुरक्षित बनाया जा सकता है। एक विकलांग व्यक्ति जो अपने जीवन यापन के लिए उपार्जन कर रहा है उसे अपने भविष्य की विभिन्न वित्तीय जरूरतों के लिए प्लानिंग जरूर करनी चाहिए।

वित्तीय परिस्थितियों की समीक्षा करें

फाइनेंशियल प्लानिंग का यह महत्वपूर्ण हिस्सा है। अधिकतर लोग अपने प्लान की समीक्षा नहीं कर पाते। देखरेख करने वाले या सरकारी लाभों में बदलाव के कारण विकलांग व्यक्ति की भविष्य की जरूरतें प्रभावित होती हैं। समीक्षा के जरिये ऐसे बदलावों के लिए व्यवस्था की जा सकती है। अगर निवेश किया गया है तो खराब प्रदर्शन करने वाले इंस्ट्रूमेंट की पहचान कर आवश्यक बदलाव किए जा सकते हैं। अमेरिका में ऐसे परिवारों के लिए समर्पित फाइनेंशियल प्लानर्स हैं। यह जागरूकता अब भारत में भी फैल रही है और कई फाइनेंशियल प्लानर ऐसे परिवारों के भविष्य की प्लानिंग कर उनकी मदद कर रहे हैं।

– लेखक सर्टिफायड फाइनेंशियल प्लानर और द फाइनेंशियल प्लानर्स गिल्ड इंडिया के सदस्य हैं।

कॉटन सीड बेचने के लिये अभी करें इंतजार

कपास की कीमतों में गिरावट के चलते कॉटन सीड भी आ रहा है नीचे

नरेश बातिश ◆ लुधियाना

कॉटन का करीब-करीब आधा आधा सीजन गुजर चुका है और अभी 40 फीसदी के करीब कपास और मंडियों में आनी बाकी है। कपास की कीमतें हालांकि समर्थन मूल्य से ऊपर जरूर हैं लेकिन इसमें तेजी का आलम नहीं है। जिसका सीधा असर कॉटन सीड (बिनौले) पर पड़ रहा है। कॉटन सीड की कीमतों में हाल ही में गिरावट का रुझान सामने आया है।

पिछले दो माह में कॉटन सीड की कीमत 1900 रुपये प्रति क्विंटल से गिरकर 1650 रुपये प्रति क्विंटल तक आ गई है। मार्केट में यह संकेत मिल रहा है कि कॉटन सीड को बाजार में बेचने के लिये फिलहाल जल्दबाजी की जरूरत नहीं बल्कि अभी इसे प्रोक्योर करने की जरूरत है। वहीं जो लोग कॉटन सीड की खरीदारी करने की इच्छा जता रहे हैं उनके लिये समय उपयुक्त है क्योंकि कॉटन सीड का रेट फिलहाल निचले स्तर पर है और आने वाले दिनों में इसमें उछाल आयेगा।

एंजल कमोडिटी ब्रोकिंग प्राइवेट लिमिटेड की विशेषज्ञ वैदिका के मुताबिक कॉटन की आवक भी इस बार धीमी चल रही है। कारण है कि इसकी ज्यादा तेजी से मांग नहीं निकल रही है। जिसकी वजह से इसके रेट तेजी से ऊपर की तरफ नहीं जा रहे हैं। जिसका असर

पिछले दो माह में कॉटन सीड की कीमत 1900 रुपये प्रति क्विंटल से गिरकर 1650 रुपये प्रति क्विंटल तक आ गई है। सीजन समाप्त होने के बाद मार्च-अप्रैल में भी यह रेट 2000 रुपये प्रति क्विंटल से ऊपर ही रहने की संभावना है।

कॉटन सीड पर भी पड़ रहा है। कॉटन की आवक के साथ कॉटन सीड की आपूर्ति बाजार में मांग से ज्यादा हो जाती है। जिसके चलते कॉटन सीड बाजार में नहीं बेचा जाना चाहिये।

हालांकि कॉटन सीड खरीद के लिये यह समय उपयुक्त है। जिसे फिलहाल स्टोर कर रखा जा सकता है और कपास की सीजन खत्म होने के बाद इसे उंचे भाव पर बेचा जा सकता है। कॉटन सीड का रेट साल भर 1900 रुपये से लेकर 2500 रुपये प्रति क्विंटल तक रहता है। मार्च अप्रैल में भी यह रेट 2000 रुपये प्रति क्विंटल से ऊपर ही रहने की संभावना है।

कॉटन कारोबारी अशोक कपूर के मुताबिक कॉटन में 67 फीसदी हिस्सेदारी कॉटन सीड की रहती है। हालांकि यह सीड की गुणवत्ता पर निर्भर करता है कि उसकी बाजारी कीमत क्या रहेगी। बिनौला की ज्यादा मांग अप्रैल माह से शुरु होती है। इन दिनों में सिर्फ स्टोर किया हुआ सीड ही बाजार में उपलब्ध हो पाता है। जिससे सीड मालिक कॉटन सीड की ऊंची कीमत हासिल कर सकते हैं। कॉटन सीड का वेल्यू एडिड प्रोडक्ट भी तेजी से विकसित हो रहा है। कॉटन सीड का तेल निकालकर इसे बाजार में बेचा जा रहा है।

अप्रैल माह के बाद तेल कारोबारियों को कॉटन सीड की काफी मांग रहती है जिससे वो दक्षिणी भारत के राज्यों से कॉटन सीड उंचे रेट पर मंगवाने को मजबूर होते हैं। इन दिनों में स्टोर किया हुआ कॉटन सीड निकालकर अच्छी आमदनी हासिल की जा सकती है। पंजाब, हरियाणा व राजस्थान में इस बार करीब 44 लाख गांठों का उत्पादन रहने का अनुमान है। जो कि पिछले साल के मुकाबले करीब 4 लाख गांठें ज्यादा हैं। इससे यह भी साफ होता है कि इस बार कॉटन सीड का भी उत्पादन बढ़ेगा। जिसे बाजार में औने पौने भावों पर बेचने की बजाय पूरी तरह सोच समझ व विचार कर बेचा जाना चाहिये। कॉटन सीड कारोबारियों के मुताबिक कॉटन की मई अंत या जून के शुरु में की जाती है। इन दिनों में कॉटन एवं कॉटन सीड की बाजार में उपलब्धता काफी कम रहती है। वहीं खाद्य तेल के रुप में उपयोग हो रहे कॉटन सीड ऑयल का रेट बाजार में 70 से 80 रुपये लीटर तक चल रहा है। इन व्यवसायियों को पूरा साल कॉटन सीड की जरूरत रहती है। अच्छे मार्जन के चलते यह कारोबारी मांग निकलने पर कॉटन सीड 2000 से 2500 रुपये क्विंटल तक भी खरीदते हैं।

कॉटन सीड की मांग खल बनाने वाले करते हैं जिनकी मांग सर्दियों की सीजन में अधिक रहती है। इसलिये यदि कॉटन सीड मालिक को यह लगता है कि उसके कॉटन सीड की गुणवत्ता खाद्य तेल के लिये उपयुक्त नहीं है तो वे इसे खल बनाने वालों को सर्दियों की पीक सीजन में बेच सकता है लेकिन उसे पहले कीमतों की संभावित स्थितियों पर नजर दौड़ा लेनी चाहिये क्योंकि इन दिनों सर्दी शुरु जरूर हुई है लेकिन अभी कॉटन सीड का रेट काफी कम है।

आकर्षक हैं मौजूदा इंफ्रा बांड

बिजनेस भास्कर ◆ नई दिल्ली

अभी दो इंफ्रास्ट्रक्चर बांड खुले हुए हैं जिनमें निवेश कर धारा 80सीसीएफ के तहत आयकर में बचत की जा सकती है। आईडीएफसी लिमिटेड ने 21 दिसंबर को अपना बांड लांच किया जबकि एल एंड टी इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनी का बांड 24 नवंबर को लांच हुआ है। आईडीएफसी का बांड 16 दिसंबर तक जबकि एल एंड टी का बांड 24 दिसंबर तक खुला हुआ है। हाल ही में पावर फाइनेंस कॉरपोरेशन और आईएफसीआई के बांड भी आए थे।

दोनों बांडों पर मिलने वाला रिटर्न

दोनों इंफ्रास्ट्रक्चर बांडों पर नौ प्रतिशत सालाना का ब्याज दिया जा रहा है जो आकर्षक है। कंपनी और निवेश दोनों के नजरिये से यह बांड अच्छे हैं क्योंकि एक तरफ जहां कंपनियों को मौजूदा बैंक फाइनेंसिंग की तुलना में कम दर पर दीर्घावधि का फंड मिल रहा है वहीं निवेशकों को कर-बचत के साथ-साथ अच्छा रिटर्न भी मिल रहा है। दोनों बांडों में ब्याज के भुगतान के दो विकल्प हैं। एक विकल्प के तहत ब्याज का भुगतान सालाना किया जाता है जबकि दूसरे विकल्प के तहत ब्याज संचित होता रहता है जिसका भुगतान बाय-बैक के समय या परिपक्वता के समय किया जाएगा।

न्यूनतम निवेश की राशि

आईडीएफसी के बांड का फेस वैल्यू 5,000 रुपये है और इसमें न्यूनतम दो बांडों यानी 10,000 रुपये का निवेश किया जा सकता है। जहां तक एल एंड टी इंफ्रास्ट्रक्चर बांड की बात है तो इसके बांड की फेस वैल्यू 1,000 रुपये है और इसमें न्यूनतम पांच बांडों में निवेश किया जा सकता है।

निवेश की अवधि

आईडीएफसी और एल एंड टी दोनों के इंफ्रास्ट्रक्चर बांड की परिपक्वता अवधि 10 साल की है और इनकी लॉक इन अवधि पांच साल की है। लॉक इन अवधि बीत जाने के बाद इन बांडों का कारोबार स्टॉक एक्सचेंजों पर किया जाएगा।

किस रूप में रखें बांड

निवेशकों के पास विकल्प है कि वह बांड को या तो डिमैटेरियलाइज्ड रूप में रखें या भौतिक रूप में। जो निवेशक लॉक इन अवधि के बाद इन बांडों की खरीद बिक्री स्टॉक एक्सचेंजों पर करना चाहते हैं, उसके लिए बांडों का डिमैटेरियलाइज्ड रूप में होना जरूरी है।

दोनों बांडों की रेटिंग

इकरा ने आईडीएफसी के बांड को एएए की रेटिंग दी है और फिच ने भी इसे एएए की रेटिंग दी है। एएए रेटिंग न्यूनतम ऋण जोखिम के साथ उच्च गुणवत्ता को प्रदर्शित करता है। एल एंड टी इंफ्रास्ट्रक्चर बांड को केयर ने एए+ और इकरा ने भी एए+ की रेटिंग दी है। यह डेट सर्विसिंग के लिए अधिक सुरक्षा और कम ऋण जोखिम को प्रदर्शित करता है। निस्संदेह, रेटिंग के नजरिये से आईडीएफसी का बांड एल एंड टी के बांड के मुकाबले कहीं बेहतर है।

बाय बैक की सुविधा

एल एंड टी के इंफ्रा बांड के अंतर्गत पांच और सात साल के बाद कंपनी बांडों की बाय बैक करेगी और निवेशक चाहें तो इस विकल्प का लाभ अपनी जरूरत के अनुसार उठा सकते हैं। अगर बाय बैक का लाभ नहीं उठाया गया तो 10 साल की अवधि के बाद भी बांडों को भुनाया जा सकता है। आईडीएफसी के बांड के मामले में पांच साल की समाप्ति बाय बैक का विकल्प है और इस बांड की परिपक्वता अवधि भी दस वर्षों की है।

अगर ब्याज दरों में बढ़ोतरी का सिलसिला जारी रहा तो बाय बैक का विकल्प अच्छा है और इसका लाभ उठाया जा सकता है ताकि पैसों का निवेश उन विकल्पों में किया जा सके जो अपेक्षाकृत अधिक ब्याज दरों की पेशकश करते हैं। अगर ब्याज दरों में गिरावट का दौर रहता है तो फिर निवेशित रहने में ही फायदा है।

निवेशकों को क्या होगा लाभ?

अगर कोई निवेशक इन बांडों में 20,000 रुपये का निवेश करता है तो उसे आयकर में कटौती का लाभ मिलेगा लेकिन इन बांडों से प्राप्त होने वाले ब्याज पर कर लगाया जाएगा। इसका मतलब हुआ कि अगर आप उच्चतम कर वर्ग में आते हैं और परिपक्वता तक निवेशित रहते हैं तो आपको कर पश्चात 10.90 प्रतिशत का यील्ड मिलेगा। अगर आप पांच साल बाद बाय बैक का विकल्प चुनते हैं तो कर पश्चात 14.70 प्रतिशत का यील्ड प्राप्त होगा। ब्याज संचित होने वाले विकल्प के तहत कर पश्चात अच्छा रिटर्न मिल रहा है। यह यील्ड तब ज्यादा अच्छा होगा अगर आप कम समय के लिए निवेशित रहते हैं। बेहतर होगा कि इन बांडों में निवेश करें और बाय बैक विकल्प का लाभ उठाते हुए निकल लें।

आने वाले हैं टैक्स फ्री इंफ्रा बांड

इस महीने सरकारी इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनियों जैसे नेशनल हाईवेज अथॉरिटी ऑफ इंडिया संभवतः अपना टैक्स फ्री बांड लांच करें। टैक्स फ्री इंफ्रा बांडों के ब्याज पर कर नहीं लगता है। उम्मीद है कि इनकी ब्याज दरें भी 10 साल के जी-सेक यील्ड के बराबर होगी।

आपका फीडबैक
9999440366
पर एसएमएस के जरिए खबरों पर आप अपना फीडबैक भेज सकते हैं

समाधान हेमंत बेनीवाल, सीईओ, आर्क फाइनेंशियल प्लानर्स, जयपुर

उच्च कर वर्ग निवेशकों के लिए एफडी से अच्छे हैं एफएमपी

मेरी उम्र 41 साल है और मैं 30 प्रतिशत के कर दायरे में आता हूं। मेरे पास 6-7 लाख रुपये नकद हैं। मैं 12-15 महीनों के लिए इनका निवेश कहां करूं क्योंकि इस अवधि के बाद मुझे रियल एस्टेट की खरीदारी के लिए इन पैसों की जरूरत होगी?

-ऋषिकेष, इंदौर

-मेरे ख्याल से ऋषिकेष आपको एक लाख रुपये आपातकालीन परिस्थितियों के लिए बैंक के बचत खाते में रखना चाहिए। जैसा कि आपने बताया है कि आपको इन पैसों की जरूरत 12-15 महीने बाद होगी और आप उच्च कर वर्ग में आते हैं तो मेरे ख्याल से आपको म्यूचुअल फंडों के फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान में निवेश करना चाहिए। फिक्स्ड मैच्योरिटी प्लान से आप फिक्स्ड डिपॉजिट की तुलना में कहीं बेहतर कर प्रभावी रिटर्न पा सकते हैं।

मैं भारतीय जीवन बीमा निगम की पॉलिसी में पिछले दस साल से 50,000 रुपये वार्षिक जमा करता आ रहा हूं। इसके अलावा एचडीएफसी एसएल क्रेस्ट में पिछले साल से 50,000 रुपये सालाना जमा कर रहा हूं। एचडीएफसी टॉप 200, एचडीएफसी इक्विटी, यूटीआई डिविडैंड यील्ड, आईडीएफसी प्रीमियर इक्विटी और बिड़ला सन लाइफ फ्रंटलाइन इक्विटी, प्रत्येक में सिस्टमेटिक इंवेस्टमेंट प्लान (सिप) के जरिये प्रति माह 2,000 रुपये का निवेश कर रहा हूं। कृपया बताएं कि मेरा निवेश पोर्टफोलियो कैसा है?

गंगा सिंह, जोधपुर

गंगाजी, मैं आपको बताना चाहूंगा कि आपकी बीमा पॉलिसियां बीमा और निवेश का मिश्रण हैं और इन दोनों को हमेशा अलग रखना चाहिए। आपने अपनी एलआईसी पॉलिसी के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं बताया है इसलिए मैं उसके संदर्भ में कुछ कह नहीं सकता। लेकिन निवेश का यह तरीका सही नहीं है। एचडीएफसी एसएल क्रेस्ट हाइएस्ट एनएवी गारंटीड फंड है जिसे निवेशक हाइएस्ट रिटर्न गारंटीड फंड समझ बैठते हैं। ऐसे प्रोडक्ट के एक्सपायर होने के बाद बीमा नियामक हाइएस्ट एनएवी प्रोडक्ट की अनुमित नहीं देगा। बीमा नियामक भी इस प्रोडक्ट को ग्राहकों के सामने जिस हिसाब से पेश किया जाता है उस तरीके से खुश नहीं है। समस्या यह है कि ऐसे प्रोडक्ट से उतने रिटर्न की भी उम्मीद नहीं की जा सकती जितनी कि एक इक्विटी ओरिएंटेड स्कीम से, क्योंकि बीमा कंपनियां ऐसे प्रोडक्ट के तहत एक बड़े हिस्से का निवेश डेट में करने की जरूरत समझते हैं। मेरी सलाह होगी कि आप ऑनलाइन टर्म इंश्योरेंस पॉलिसी खरीदें। आप अपने बीमा एजेंट के साथ भी इस मसले पर चर्चा कर सकते हैं। जहां तक आपके सिप की बात है तो अच्छा रहेगा यदि आप इसे लंबे समय तक जारी रखते हैं। दीर्घावधि में अस्थिरता घटेगी और रिटर्न भी अच्छा मिलेगा जिससे आप अपने लक्ष्यों को पा सकते हैं।

मेरी उम्र 30 साल है और मैं सिस्टमेटिक इंवेस्टमेंट प्लान यानी सिप के जरिये तीन फंडों में 1,000-1,000 रुपये का निवेश करना चाहता हूं। मैंने निवेश के लिए एचडीएफसी इक्विटी फंड, रिलायंस ग्रोथ फंड और एसबीआई मैग्नम ग्लोबल फंडों को चुना है। मैं इनमें से प्रत्येक में प्रति माह 1,000 रुपये का निवेश 10 साल से अधिक अवधि के लिए करना चाहता हूं। क्या फंडों का मेरा चयन ठीक है? कृपया मुझे यह भी बताएं कि मैं इन योजनाओं में किस प्रकार निवेश करूं?

-उज्ज्वल राठौर, दिल्ली

तीस साल की उम्र में निवेश के प्रति गंभीरता अच्छी बात है और सिप निवेश का बेहतरीन तरीका है। लेकिन आपको निवेश की समय-सीमा 10 साल ही सीमित नहीं रखनी चाहिए। निवेश को हमेशा लक्ष्य से जोड़ कर चलना चाहिए।

अगर आप 55 साल की उम्र में रिटायर होना चाहते हैं तो आपको 25 साल या इससे अधिक अवधि के लिए निवेश करना चाहिए। अगर आप अपने द्वारा चयनित फंडों के बारे में जानना चाहते हैं तो मैं कहना चाहूंगा कि इन फंडों ने अच्छा रिटर्न दिया है। एचडीएफसी इक्विटी एक मल्टी कैप फंड है और अन्य मिड कैप फंड हैं। आप अभी युवा है और अपेक्षाकृत अधिक जोखिम उठा सकते हैं लेकिन आप म्यूचुअल फंड की दुनिया में नये हैं इसलिए आपको एक मिड कैप फंड की जगह लार्ज कैप फंड में निवेश करना चाहिए। दूसरा मसला एसबीआई मैग्नम फंड का है। मुझे लगता है इसकी अल्पावधि के प्रदर्शन को देख कर आपने अपने पोर्टफोलियो में शामिल किया है।

मेरा सुझाव है कि आप फंडों के चयन पर एक बार फिर से गौर करें। फ्रैंकलिन ब्लूचिप, एचडीएफसी इक्विटी और डीएसपी बीआर स्मॉल एंड मिड कैप एक बेहतर पोर्टफोलियो बना सकता है। आप किसी स्थानीय एजेंट के जरिये सिप की शुरुआत कर सकते हैं या फिर बैंक या सीधे एसेट मैनेजमेंट कंपनी से संपर्क कर सकते हैं।

सूचना

इस पेज पर रोजाना पर्सनल फाइनेंस से जुड़ी गुत्थियों को सुलझाया जाता है।

- मनी मंत्र- **शनिवार**
- मेरा पैसा मेरा शेयर- **सोमवार**
- मेरा पैसा मेरा बीमा- **मंगलवार**
- मेरा पैसा मेरी जायदाद- **बुधवार**
- कर्ज से कमाई- **गुरुवार**
- मेरा पैसा मेरा फंड- **शुक्रवार**

बिज़नेस भास्कर
2ई/22, लोअर ग्राउंड फ्लोर,
इंडेवालान एक्सटेंशन, (स्वामी रामतीर्थ नगर)
नई दिल्ली-110055
E-mail - editor@businessbhaskar.net
-संपादक

(डिसक्लेमर : संबंधित कंपनियों का आकलन निवेश सलाहकारों और ब्रोकिंग रिसर्च फर्मों ने शोध के आधार पर किया है। निवेश से पहले जोखिम का आकलन खुद भी करें। नुकसान व जोखिम आदि के लिए डीबी कॉर्प लिमिटेड जिम्मेदार नहीं होगी।)